"उपमा कालिदासस्य" – इस कालिदासविषयक प्रशस्ति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

संस्कृत साहित्य में कालिदास उपमा के लिए विशेष प्रसिद्ध रहे हैं। 'उपमा कालिदासस्य' यह सूक्ति तो कालिदास के लिए ही प्रसिद्ध हो गयी। उपमा के एक से एक सुन्दर प्रयोग उनके द्वारा देखे जा सकते हैं। कालिदास की उपमाओं में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे कृत्रिम न होकर सुन्दर, सरल और स्वाभाविक हैं। उनमें उच्छिष्टता न होकर नवीन कल्पना है और वे जीवन के और ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र से तथा बहिर्जगत् और अन्तर्जगत् से चुनी गई हैं। इतना ही नहीं कवि ने उपमान और उपमेय के लिंग व वचन में भी समता का ध्यान रक्खा है। कालिदास की उपमाएँ अनुरूपता, सरसता तथा अपूर्वता की दृष्टि से भी बेजोड़ हैं। एक स्थान पर वे कहते हैं कि दिलीप और सुदक्षिणा के मध्य में नन्दिनी गाय इसी प्रकार से शोभा पा रही है जैसे दिन और रात के मध्य में होने वाली रक्तवर्णा संध्या---

पुरस्कृतः वर्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या ।

तदनन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या।।

अन्यत्र दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा के नन्दिनी के पीछे जाने की तुलना श्रुति के अर्थ के पीछे स्मृति के अनुगमन से की गई है-

'तस्या... मार्ग मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् ।'

इसी प्रकार से एक स्थान पर कवि का कथन है कि पौर स्त्रियाँ राजकुमार अतिथि का अपने नेत्रों द्वारा उसी प्रकार अनुसरण कर रही थीं जिस प्रकार चमकते हुए तारों वाली शरद् ऋतु की रात्रियाँ ध्रुव नक्षत्र का अनुगमन करती हैं-

शरत्प्रसन्नैर्ज्योतिभिर्विभावर्य इव. ध्रुवम्।

कालिदास की उपमाएँ केवल रमणीय ही नहीं हैं अपितु यथार्थ भी हैं यथा एक स्थल पर कवि ने कहा है-

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा ।

नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः ॥

अर्थात् स्वयंवर के समय इन्दुमती जिस राजा को छोड़ती जाती है, उसके मुख पर निराशा की ऐसी कालिमा छा जाती है जैसी राजमार्ग के उन महलों पर जिन्हें रात्रि के समय आगे बढ़ने वाली दीपशिखा पीछे छोड़ती चली जाती है।

उपमाओं की विविधता भी कालिदास के यहाँ दर्शनीय है । एक स्थान पर यदि वे दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा के नन्दिनी के पीछे जाने की तुलना श्रुति के अर्थ के पीछे स्मृति के अनुगमन से करते हैं तो दूसरे स्थान पर दिलीप और सुदक्षिणा के मध्य में नन्दिनी ऐसी शोभा पाती हुई दीखती है जैसे दिन और रात के बीच सन्ध्या। कालिदास ने अपनी उपमाओं का चयन विभिन्न स्थानों से किया है यथा एक स्थान पर शास्त्रों से उपमा ग्रहण करते हुए वे लिखते हैं-ब्राह्म सरोवर से निकलने वाली सरयू सांख्य-शास्त्र के अव्यक्त मूल प्रकृति से उत्पन्न होने वाले बुद्धि तत्त्व की तरह है। इसी प्रकार से अन्यत्र व्यवहार और अनुभव से सूझी हुई उपमाएँ मिलती हैं-दुष्यन्त को सौंपी गई शकुन्तला सुपात्र को दी गई विद्या के समान है । इतना ही नहीं कतिपय स्थलों पर तो कवि ने व्याकरण आदि के क्षेत्रों से भी उपमाएं ग्रहण की हैं।

अतः कहा जा सकता है कि कालिदास की उपमा में अनुपम छटा है । अन्य कोई कवि इस दिशा में कालिदास की क्षमता नहीं कर पाया है । यद्यपि भवभूति की उपमाएं भी बिल्कुल उपयुक्त हैं परन्तु वे कठिन हैं और उनमें कालिदास के समान सरलता, समता और व्यंजकता का अभाव है । इसी कारण से सभी कालावधि के विद्वानों के द्वारा कालिदास की उपमाओं की प्रशंसा उचित ही है।